Indian J. Soc. & Pol. 05(02):79-82:2018 **ISSN: 2348-0084(PRINT)**
UGC List No. 47956 (Till May 2,2018) **ISSN: 2455-2127(ONLINE)**

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के पृथक्करण का उनके आकांक्षा स्तर पर प्रभाव का अध्ययन

लालमणि[1a]
[1a]शोध छात्र, मोनाड विश्वविद्यालय,कस्माबाद, पिलखुआ, हापुड़, उत्तर प्रदेश, भारत

ABSTRACT

माध्यमिक स्तर के छात्रों में व्याप्त पृथक्करण की पहचान, छात्रों के शैक्षिक परिणामों और समाज में सफल भागीदारी के लिए बहुत महत्व है। यह अध्ययन इटावा जिले के सैफई विकास क्षेत्र के 1000 विद्यार्थियों के प्रतिदर्श पर किया गया जिसमें 500 छात्र एवं 500 छात्रायें सम्मिलित थी। अध्ययन में पृथक्करण के मापने के लिए मानकीकृत उपकरणों, डॉ0 आर0 आर0 शर्मा द्वारा निर्मित छात्र पृथक्करण मापनी एवं प्रोफेसर ए.के.पी. सिन्हा एवं प्रोफेसर आर.पी. सिंह द्वारा 'समायोजन परिसूची' का प्रयोग किया गया। अध्ययन के परिणामों से स्पष्टहोता है कि माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर पर उनके पृथक्करण की भावना का ऋणात्मक प्रभाव पड़ता है। इस अध्ययन के परिणाम माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर एवं पृथक्करण के सन्दर्भ में महत्वपूर्ण सूचना प्रदान करते हैं जो माध्यमिक स्तर के शिक्षा एवं इस स्तर पर कार्यरत अध्यापकों, नीति निर्धारकों आदि का मार्गदर्शन कर सकते हैं।प्रस्तुत शोध–पत्र में माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के पृथक्करण का उनके आकांक्षा स्तर पर प्रभाव सम्बन्धी विवरण प्रस्तुत किया जा रहा है।

***KEY WORDS:** माध्यमिक शिक्षा, किशोरावस्था, पृथ्थक्करण, आंकांक्षा स्तर*

प्रस्तावना : शिक्षा मानव विकास का मूल साधन है। इसके द्वारा व्यक्ति की जन्मजात शक्तियों का विकास, उसके ज्ञान एवं कला कौशल में वृद्धि एवं व्यवहार में परिवर्तन किया जाता है और उसे सभ्य, सुसंस्कृत एवं योग्य बनाया जाता है। बालक जब इस संसार में आता है तो वह एक अबोध एवं असहाय प्राणी मात्र होता है। वह बोलना, चलना, हंसना, खेलना इत्यादि क्रियायें अपने माता–पिता तथा परिवार से सीखता है। जब बालक परिवार से निकलकर विद्यालय में प्रवेश करता है तो वहाँ पर उसे नवीन परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है इन परिस्थितियों का सामना करने हेतु वह अनुकरण का सहारा लेता है। विद्यालय में वह पढ़ना–लिखना, सामाजिक आचरण, अच्छी आदतें आदि को सीखता है। सीखने की यह क्रिया आजीवन चलती रहती है और इस सीखने की प्रक्रिया के द्वारा वह अपने व्यवहार में परिमार्जन एवं परिवर्तन करता जाता है। किसी समाज में सदैव चलने वाली सीखने–सिखाने की यह सोद्देश्य प्रक्रिया ही शिक्षा कहलाती है।

पृथक्करण : पृथक्करण असाधारण प्रकार की मनोवैज्ञानिक अवस्था है, जिसमें स्वयं की व्यग्रता, अनियमितता, आशाहीनता, रूचिशून्यता, विप्लवता, एकान्तता, असमर्थता, अर्थहीनता, निराशावादिता, तथा विश्वासहीनता का भाव पाया जाता है। इस प्रकार पृथक्करण आधुनिक समाज में अवैयक्तिक समाज की उस प्रक्रिया का द्योतक जिसके अन्तर्गत व्यक्ति स्वयं अपने समाज व सामूहिक जीवन से कुछ पृथक सोचने का बोध करता है तथा स्वयं अपने समाज में ही वह अपने आप को अलग महसूस करता है।

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि पृथक्करण अवैयक्तिक समाज की उस प्रक्रिया का द्योतक है। जिसके अन्तर्गत व्यक्ति स्वयं अपने ही समाज व सामूहिक जीवन से कुछ पृथक सोचने का बोध करता है। स्वयं अपने ही समाज या समूह में वह अनजान बना रहता है। जैसा कि उदाहरण के तौर पर यह देखा जाता है कि कुछ लोग ऐसे होते हैं जो किसी समूह में प्रतिदिन होते हुए भी वे सभी लोगों से किसी न किसी रूप में अलग–अलग रहते हैं। वह व्यक्ति अपने आस–पास, मोहल्ले या पड़ोस में, अपने परिवार में यहाँ तक कि स्वयं अपने लिए भी अनजान बना रहता है और एक अनजान के रूप में निवास करता है। ऐसी स्थिति में समाज या समूह के साथ इसके अलगाव पन का होना बहुत ही स्वाभाविक है। व्यक्ति और व्यक्ति के बीच, व्यक्ति और समूह के बीच, समूह और समूह के बीच एवं व्यक्ति और समुदाय के बीच पड़ने वाले इस परायेपन या अलगावपन की प्रक्रिया को पृथक्करण कहते हैं।

आकांक्षा स्तर : व्यक्ति के व्यक्तित्व के विकास में अनेक मनोवैज्ञानिक कारकों यथा बुद्धिलब्धि, आत्म सम्प्रत्यय, मूल्य, उसकी अभिवृत्तियों के अतिरिक्त आकांक्षा स्तर भी एक महत्वपूर्ण कारक है। वह मनोवृत्ति जो किसी बात या वस्तु की प्राप्ति की ओर ध्यान ले जाती है व्यक्ति की आकांक्षा कहलाती है। दूसरे शब्दों में आकांक्षा स्तर कुछ करने के लिए मजबूत इच्छाएं या आमतौर पर अधिक मूल्यों या उच्च आदर्शों से संबंधित है अर्थात आकांक्षा स्तर व्यक्ति की वह मनोवैज्ञानिक स्थिति है जब उसे किसी लक्ष्य को प्राप्त करने के सम्बन्ध में लगता है कि वह प्राप्त कर सकता है । इस प्रकार आकांक्षा स्तर एक मनोसामाजिक प्रत्यय है जो अस्थिर और कभी–कभी स्थिर होता है। किसी व्यक्ति का आकांक्षा स्तर उसकी प्रेरणाओं सफलताओं, विफलताओं और आंतरिक शक्ति पर निर्भर करता है।

1: Corresponding Author

सारिणी संख्या – 1

उच्च पृथक्करण स्तर वाले विद्यार्थियों एवं निम्न पृथक्करण स्तर वाले विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर प्राप्तांकों के मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात की सारिणी।

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात (CR)	सार्थकता 0.05 स्तर	सार्थकता 0.01 स्तर
निम्न पृथक्करण स्तर वाले विद्यार्थी	441	4.18	1.74	23.78	+	+
उच्च पृथक्करण स्तर वाले विद्यार्थी	411	1.27	1.83			

अध्ययन के उद्देश्य : अध्ययन का उद्देश्य माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के पृथक्करण, का उनके आकांक्षा स्तर, पर प्रभाव एवं सहसम्बन्ध का अध्ययन करना है।

अध्ययन की परिकल्पनायें :

प्रस्तुत समस्या के अध्ययन हेतु निम्नलिखित शून्य परिकल्पनाओं का निर्माण किया गया –

1. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के पृथक्करण का उनके आकांक्षा स्तर पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं होता है।
2. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के पृथक्करण एवं आकांक्षा स्तर में कोई सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है।

शोध विधि : प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधकर्ता का उद्देश्य माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में पृथक्करण, समायोजन, एवं आकांक्षा स्तर का शैक्षिक उपलब्धि के सन्दर्भ में अध्ययन करना है। अतः समस्या की प्रकृति के आधार पर सर्वेक्षण विधि का प्रयोग करना उचित पाया। क्योंकि सर्वेक्षण विधि वर्तमान प्रयासों से सम्बन्धित है जो अनुसंधान के अन्तर्गत घटना तथ्य की स्थिति को निर्धारित करती है।

न्यादर्श :

यद्यपि उत्तर प्रदेश में स्थित माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत सभी विद्यार्थी प्रस्तुत अध्ययन की जनसंख्या हैं परन्तु समय एवं साधनों की परिसीमाओं का ध्यान रखते हुए उत्तर प्रदेश के इटावा जिले के सैफई विकास क्षेत्र में स्थित माध्यमिक विद्यालयों के कक्षा 11 में अध्ययनरत 1000 छात्र–छात्राओं को यादृच्छिक विधि से न्यादर्श के रूप में चुना गया।

शोध अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण : प्रस्तुत शोध अध्ययन में निम्नलिखित मानकीकृत उपकरणों की सहायता से प्रदततों का संकलन किया गया –

1. डॉ0 आर0 आर0 शर्मा द्वारा निर्मित छात्र पृथक्करण मापनी।
2. डा0 महेश भार्गव एवं डा0 एम0एस0 शाह द्वारा निर्मित आकांक्षा स्तर मापनी।

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या :

ग्राफ संख्या 01

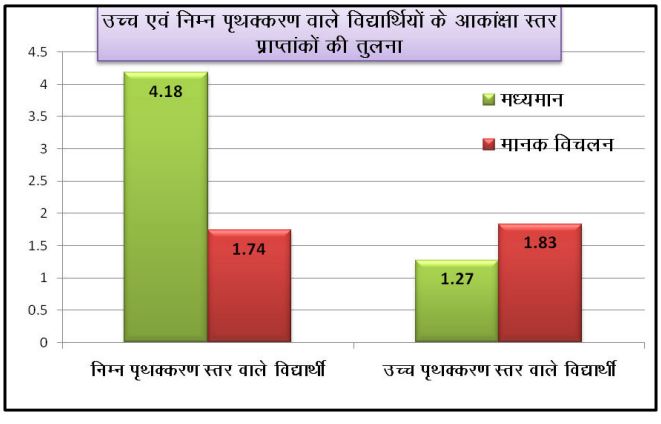

उपरोक्त सारिणी एवं ग्राफ से स्पष्ट है कि माध्यमिक स्तर के निम्न पृथक्करण स्तर वाले विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर प्राप्तांकों का मध्यमान, उच्च पृथक्करण स्तर वाले विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर प्राप्तांकों के मध्यमान से अधिक है। इन दोनों मध्यमानों के क्रान्तिक अनुपात का मान सार्थकता के स्तर 0.01 पर सार्थक है। स्पष्ट है कि निम्न पृथक्करण स्तर एवं उच्च पृथक्करण स्तर वाले विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर प्राप्तांकों के मध्यमानों मे साथर्क अन्तर है। अतः यहाँ पर परिकल्पना स, ''माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के पृथक्करण का उनकी आकांक्षा स्तर पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं होता है'', अस्वीकृत की जाती है।

सारिणी संख्या 2

पृथक्करण एवं आकांक्षा स्तर के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक सारिणी

चर	संख्या	मध्यमान	सहसम्बन्ध गुणांक	सहसम्बन्ध निर्धारक गुणांक
पृथक्करण	1000	30.45	- 0.67	0.45
आकांक्षा स्तर	1000	2.73		

पृथक्करण प्राप्ताकों के अरोही क्रमानुसार विद्यार्थियों के समूहों का मध्यमान

समूह	1-100	101-200	201-300	301-400	401-500	501-600	601-700	701-800	801-900	901-1000
पृथक्करण	5.13	7.83	9.94	11.62	14.17	17.67	20.45	23.39	27.05	30.86
आकांक्षा स्तर	4.457	4.346	4.328	3.849	2.811	2.223	1.695	1.607	1.222	0.673

ग्राफ संख्या 02

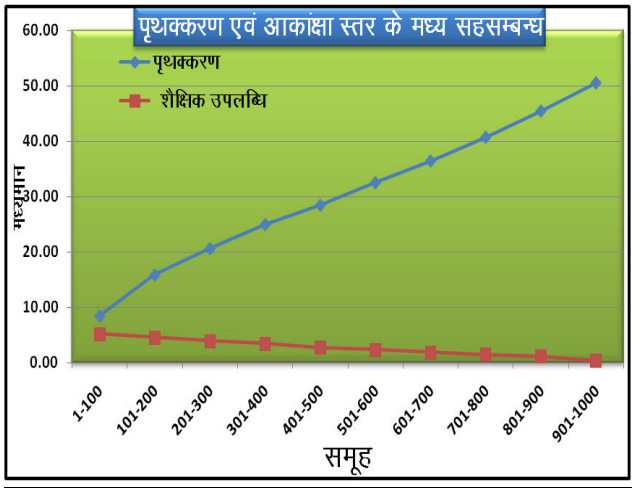

उपरोक्त सारिणी एवं ग्राफ के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि माध्यमिक स्तर के सम्पूर्ण विद्यार्थियों के पृथक्करण का मध्यमान 30.45 एवं आकांक्षा स्तर का मध्यमान 2.73 है। पृथक्करण एवं आकांक्षा स्तर का सहसम्बन्ध –0.67 है जो परिमित ऋणात्मक सहसम्बन्ध को इंगित करता है। स्पष्ट है कि माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के पृथक्करण एवं आकांक्षा स्तर में परिमित ऋणात्मक सहसम्बन्ध है। अर्थात एक की अधिकता दूसरे के कमी की का कारण बनती है। इन दोनों चरों का सहसम्बन्ध निर्धारक गुणांक 0.45 है जिसके आधार पर कहा जा सकता है कि पृथक्करण एवं आकांक्षा स्तर में एक दूसरे पर 43 प्रतिशत अन्तःक्रियात्मक प्रभाव है। अतः यहाँ पर परिकल्पना, ''माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के पृथक्करण एवं आकांक्षा स्तर में कोई सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है'', अस्वीकृत की जाती है।

परिणाम :

1. माध्यमिक स्तर के उच्च पृथक्करण स्तर वाले एवं निम्न पृथक्करण स्तर वाले विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर में सार्थक अन्तर है तथा उच्च पृथक्करण स्तर वाले विद्यार्थियों की अपेक्षा निम्न पृथक्करण स्तर वाले विद्यार्थियों का आकांक्षा स्तर अधिक है।
2. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के सामयोजन एवं आकांक्षा स्तर में ऋणात्मक सहसम्बन्ध है।

निष्कर्ष :

1. माध्यमिक स्तर के उच्च पृथक्करण स्तर वाले विद्यार्थियों एवं निम्न पृथक्करण स्तर वाले विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर में सार्थक अन्तर है तथा निम्न पृथक्करण स्तर वाले विद्यार्थियों के आकांक्षा का स्तर, अपेक्षाकृत उच्च पृथक्करण स्तर वाले विद्यार्थियों के आकांक्षा के स्तर से अधिक है। निष्कर्ष स्वरूप कहा जा सकता है कि माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के पृथक्करण का उनके आकांक्षा स्तर पर सार्थक ऋणात्मक प्रभाव पड़ता है।

अर्थात विद्यार्थियों में पृथक्करण की भावना जितनी ही अधिक थी उनके आकांक्षा स्तर में उतनी ही कमी पायी गयी।

2. पृथक्करण की अधिकता आकांक्षा स्तर के न्यूनता का कारण हो सकती है इसके विपरीत पृथक्करण की न्यूनता होने पर आकांक्षा स्तर में वृद्धि परिलक्षित होती है।

शैक्षिक निहितार्थ एवं सुझाव :

आज के इस समकालीन विश्व और आधुनिक युग में शिक्षा बहुत आवश्यक है। शिक्षा एक ऐसी चीज है जिसके बिना सफलता असंभव के बराबर है। शिक्षा ही किसी समाज और राष्ट्र की जागृति का मूल आधार है।किन्तु आज के भौतिकवादी युग में जहाँ प्रत्येक व्यक्ति का जीवन लगभग एकाकी होता जा रहा है वहीं युवाओं एवं किशारों में भी अनेक कुंठायें, मनोवृत्तियाँ, भग्नाशा, चिंता, निराशा, दुराशा, पृथक्करण एवं अलगाव की भावनायें तेजी से पनप रही हैं। अतः आज के परिवेश में युवाओं अथवा किशोरों की मनोवैज्ञानिक एवं मनो–सामाजिक दशा को जाने बिना उन्हें शिक्षा प्रदान करने से शिक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति असम्भव नही ंतो संदिग्ध अवश्य हो सकती है। पृथक्करण की भावना के कारण व्यक्ति के जीवन में गंभीर परिवर्तन होते हैं। पृथक्करण की स्थिति तब होती है जब कोई व्यक्ति अपने पर्यावरण, अपने प्रियजनों, समाज या अन्य लोगों से अलग हो जाता है या अलग होने के लक्षण प्रकट करता है। पृथक्करण की अधिकता वाले व्यक्ति अपने काम, अपने परिवार या मित्रों से अलगाव अथवा दूरी महसूस करते हैं। ऐसे व्यक्ति स्वयं को असहाय महसूस करते हैं तथा निराश होते हैं। अतः आज किशोरों में पृथक्करण की भावना का होना निश्चित तौर पर एक गम्भीर समस्या है।

अध्ययन के निष्कर्षों के आधार पर कहा जा सकता है कि विद्यार्थियों के पृथक्करण का उनके समायोजन क्षमता, आकांक्षा स्तर एवं शैक्षिक उपलब्धि पर ऋणात्मक प्रभाव पड़ता है। अध्ययन में निष्कर्ष स्वरूप यह भी पाया गया कि पृथक्करण, समायोजन क्षमता एवं आकांक्षा स्तर आपस में सहसम्बन्धित हैं।

अतः आज यह आवश्यक है कि माता–पिता और शिक्षक उन क्षेत्रों को जानकर उन्हें दूर करने का प्रयास करना चाहिए जो छात्रों में पृथक्करण की भावना का प्रादुर्भाव कराते हैं। साथ ही विद्यार्थियों को उचति एवं बेहतर परिस्थितियों को प्रदान करना चाहिए जिससे उनके पृथक्करण जैसे नकारात्मक मनोवृत्तियाँ दूर की जा सकें। इसके लिए आवश्यक है कि विद्यालयों में पाठ्यचर्या आदिका उचित प्रबन्ध हो तथा विद्यालय का माहौल सद्भावनापूर्ण एवं सौहार्दपूर्ण हो।

सन्दर्भः

जोशी, आर (1985) . *स्टडी आफ फैक्टर्स इफेक्टिंग एलीनेशन इन द इम्पलाइल आफ कुमाँयू यूनिवर्सिटी,* एम.बी.बुच. फोर्थ सर्वे आफ एजुकेशनल रिसर्च, नई दिल्ली, पृ0 157

https://sites.google.com/site/gyanvigyanvatika2/samayojana

सिंह, डॉ सोमवीर (1991) . *आर्बनाइजेशन ऐण्ड एलीनेशन : ए स्टडी ऑफ सेकेंडरी स्कूल टीचर्स'' द प्रोग्रेसिव ऑफ एजुकेशन,* नवम्बर विद्यार्थी गृह प्रकाशन, पुणे. पृ0 70–72.

राय, पी. एन. (1989) *अनुसंधान परिचय,* लक्ष्मीनारायण अग्रवाल पब्लिकेसन, आगरा, पृ 289